आधुनिक युग में महिलाओं के नेतृत्व की बढ़ती भूमिका से समाज का बदलता परिदृश्य

(Changed Scenario of Society from Increasing Role of Leadership of Women's in Modern Age)

डॉ0 कृष्ण कुमार केशरवानी
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय पुस्तकालय
डॉ0 भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
मोबाइल नं. 7599117491
ईमेल : kesharwani67@gmail.com

एवं

लकी केशरवानी
अधिवक्ता
जिला एवं सत्र न्यायालय, सागर (म.प्र.)
मोबाइल नं. 6263090806
ईमेल : advocateluckykesharwani@gmail.com

सारांश (Abstract) :–

वर्तमान समय सूचना, संचार एवं तकनीकी से ओत–प्रोत है और इस बदले हुये परिवेश में आधुनिक युग में महिलाओं के नेतृत्व की भूमिका समाज एवं परिवार के साथ–साथ देश एवं राष्ट्र के विकास तथा नवनिर्मित विविध आयामों एवं विधाओं के प्रत्येक क्षेत्रों जैंसे राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक/व्यवसायिक, रोजगारोन्मुख, सुरक्षा, वैज्ञानिक, सैन्य/सुरक्षा, खेलजगत एवं सांस्कृतिक इत्यादि के शीर्ष पटलों में भी पूर्ण सकारात्मकता के साथ पुरूषों की समान भागीदारी एवं सहभागिता की भॉति एक नेतृत्वपूर्ण गुणात्मक पर्याप्त उत्तरदायित्वता के परिणामों के प्रतिफल में समाज एवं राष्ट्र को प्राप्त हो रहे हैं और वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में समाज में महिलाओं के सम्मान की स्थिति, स्वतंत्रता एवं आर्थिक सबलता भी विगत् दशकों की अपेक्षा काफी सुदृढ़ एवं संतोषजनक स्थिति में है । प्रस्तुत आलेख के माध्यम से आधुनिक युग में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के श्रम साध्य की भागीदारी से समाज एवं राष्ट्र के विकास में योगदान एवं महिलाओं के बढते सशक्तिकरण की दोहरी भूमिकाओं के साथ वर्तमान चुनौतियों एवं समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है ।

शब्द बीज (Keywords) :–

महिला, समाज, परिवार, भेदभाव, सहभागिता, नेतृत्व, शिक्षा, सूचना एवं तकनीकी, चुनौतियॉ एवं समस्यायें ।

प्रस्तावना (Introduction) :–

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों की परिवर्तनशीलता में प्रत्येक राष्ट्र एवं समाज के विकास में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की भूमिका विगत् कुछ दशकों की अपेक्षा आधुनिक युग में बहुत ही अधिक सशक्तता के साथ राष्ट्र एवं समाज के विकास के प्रत्येक क्षेत्र के कार्य कौशल के रूप में

लगभग पुरूषों की भागीदारी की समानता की समतुल्यता के बराबरी के अनुपात में प्राप्त हो रही है, संबंधी प्रस्तुत कथन में कोई अतिशियोक्ति नहीं है । वर्तमान समय सूचना, संचार एवं तकनीकी के बहुआयामी प्रचलित संसाधनों से परिलक्षित है और इससे वैश्विक स्तर पर वस्तुतः अनेंकों प्रकार की सामाजिक संस्कृतियों का मिलन हुआ है और प्रचलित उन्नत सूचना तकनीकी के संसाधनों से वर्तमान समाज में मानव जाति की जीवन पद्धति काफी स्तर तक विकसित हुई है एवं व्यक्ति के विचारों में भी काफी बदलाव हुआ है, जिससे समाज में महिलाओं के उत्थान एवं विकास हेतु पुरूष वर्गों का कुछ हद तक सहयोग प्राप्त हुआ है और पुरूषों की इस प्रवृत्ति ने समाज में महिला वर्ग को अपेक्षाकृत प्रभावित तो किया है, किन्तु समाज में हमेशा से ही दमन एवं शोषण से ग्रसित रही महिलाओं के लिये पुरूषों का प्राप्त यह सहयोग पर्याप्त नहीं है, अभी इसमें और गुणात्मकता की आवश्यकता है ।

ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक दृष्टि से यदि देखा जाये तो भारत में हिन्दू समाज में महिलाओं का स्थान 11 वीं शताब्दी से पूर्व वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल में अत्यन्त पूज्यनीय रहा है और कुछ सदियों के कालान्तर के समय को छोड़कर आज वर्तमान समाज के आधुनिक समय में भी प्राप्त है । हमारा विचार यह भी है कि जिस समाज में महिलाओं की पूजा होती है और जिस समाज एवं परिवार में उनका पूर्ण आदर तथा सम्मान किया जाता है, वहॉ देवी–देवताओं का वास होता है । परन्तु हम व्यवहारिक दृष्टि से यह देखते हैं कि स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है, वह इसलिये कि हमारे धर्मशास्त्रों के अनुसार महिला स्वतंत्रता के योग्य नहीं होती है, यह कहकर समाज में महिलाओं को पूर्णतः पुरूषों के दासत्व के अधीन आदि काल से ही कर दिया गया है । जिसका प्रमुख कारण यह है कि आज भी समाज में महिलाओं को स्वतंत्र एवं स्वच्छन्द वातावरण में जीने का अधिकार तो मानो है ही नहीं, क्योंकि बालिका बचपन से पिता एवं भाई के निर्देशों के अनुसरण रहती है, विवाह के बाद पति की अनुगामिनी होकर पति के दासत्व में रहती है और पति के बाद अपनी सन्तान के निर्देशों के संरक्षण में अपना जीवन व्यतीत करती है, इस प्रकार समाज में महिलाओं के जीवन का एक क्षण भी उनकी मनमाफिक स्वतंत्रता एवं स्वच्छन्ता के वातावरण में बिल्कुल भी नहीं होता है ।

भारतीय समाज में व्यवहारिक दृष्टिकोण से महिलाओं की वास्तविक स्थिति यह है कि पुरूषों की अपेक्षा महिलायें अनादिकाल से ही हमेशा अधिक श्रम साध्य एवं सहनशील रही हैं, और आज आधुनिक समय में भी परिवार एवं समाज की उत्तरदायित्वताओं की भूमिका के साथ देश की प्रत्येक क्षेत्रों की विकासधारा में अपनी नेतृत्वता पूर्ण भागीदारिता के योगदान के निर्वहन से देश एवं समाज के विकास के प्रत्येक क्षेत्रों जैंसे राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक/व्यवसायिक, रोजगारोन्मुख, वैज्ञानिक, सैन्य/सुरक्षा, खेलजगत एवं सांस्कृतिक इत्यादि के शीर्ष पटलों में भी नेतृत्व पूर्ण सकारात्मकता के साथ पुरूषों के समान भागीदारी की दोहरी भूमिका की उत्तरदायित्वता को निभा रही हैं, किन्तु इसके बाद भी हमारे समाज में आज भी महिलाओं को पुरूषों की दासत्वता से मुक्ति नहीं मिली है और न ही पुरूषों की भॉति समानता का अधिकार प्राप्त हुआ है, जोकि हमेशा यह विचारणीय तथ्य रहा है और हमेशा बना रहेगा ।

भारतीय समाज में महिला विकास की अवधारणा (Concept of Women Development in Indian Society) :–

आधुनिक युग में वैश्विक परिधि के साथ भारत में भी महिलाओं की स्थिति में काफी तीव्रगति से परिवर्तन हो रहा है, इस परिवर्तन का मुख्य कारण है महिलाओं की बहुआयामी शिक्षा एवं पूर्ण रूपेण साक्षरता की चेतना एवं जाग्रति । प्रत्येक जीवन, समाज एवं राष्ट्र के विकास में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देश एवं भारतीय समाज के विकास में महिलाओं के भागीदारी की नेतृत्व पूर्ण भूमिका का प्रमुख कारण महिलाओं की उच्च से उच्चतर शिक्षा प्राप्ति का प्रतिफल है कि आज महिलायें देश एवं समाज के प्रत्येक क्षेत्रों जैंसे राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक/व्यवसायिक, रोजगारोन्मुख, चिकित्सा, सैन्य–सुरक्षा, वैज्ञानिक,, खेलजगत, इंजीनियरिंग, मीडिया एवं सांस्कृतिक इत्यादि की सेवाओं में भी नेतृत्व पूर्ण सकारात्मकता के साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भूमिका

को लगभग पुरूषों के समान पूर्ण ईमानदारी से निभा रही हैं, जिससे देश एवं समाज के बदलते एवं विकसित परिदृश्य में महिलाओं के नेतृत्वता का महत्वपूर्ण योगदान है ।

महिला शिक्षा का इतिहास (History of Women Education) :–

किसी देश एवं समाज में महिलाओं को शिक्षित करना जितना जटिल कार्य है, उतना महत्वपूर्ण भी है । यदि परिवार में एक लड़के को शिक्षा दी जाती है तो केवल एक लड़के को शिक्षित किया जाता है और यदि एक लड़की को शिक्षा दी जाती है तो जिसका प्रतिफल है कि पूरे परिवार को शिक्षित करना है । प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक महिलाओं की शिक्षा विभिन्न चरणों से गुजरी है । भारतीय समाज में वैदिक काल में महिलाओं को पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था, जिसमें वेद पढ़ने, यज्ञ करने एवं सहशिक्षा के द्वारा सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार था । ब्राह्मण युग में महिलाओं की शिक्षा प्राप्ति में काफी व्यवधान थे और महिला शिक्षा पर अनेंकों प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे तथा बौद्धकाल में महिलाओं की व्यवसायिक शिक्षा को काफी प्रोत्साहन प्राप्त था । मुस्लिम काल में महिलाओं की शिक्षा का प्रतिशत काफी कम था, इसका मुख्य कारण यह था कि पर्दा–प्रथा होने के कारण महिलाओं की शिक्षा सार्वजनिक नहीं होती थी, लड़कियों को घर पर ही शिक्षा दी जाती थी और व्यक्तिगत रूप से ही इस काल में शिक्षा दिये जाने का प्रचलन था । बिट्रिश काल में भी महिलाओं के शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं थी । देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिलाओं को उच्च से उच्चतर शिक्षा में दक्ष करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत महिला शिक्षा की अनेंकों नीतियों एवं योजनाओं को लागू किया गया था, जिसका प्रतिफल है कि आज हमारे देश एवं समाज की असंख्य महिलायें सभी विषयों की शिक्षा प्राप्ति से पारंगत होकर देश एवं समाज के विकास के प्रत्येक क्षेत्रों में एक प्रमुख नेतृत्व पूर्ण प्रतिनिधित्वता के आधार पर पुरूषों के समान एक बराबर भागीदारी के रूप में निर्वाह कर रही हैं ।

आधुनिक युग में भारतीय महिलायें प्रत्येक व्यावसायिक पाठ्यक्रम में भी पुरूषों के साथ प्रवेश ले रही हैं और व्यावसायिक क्षेत्र का कोई भी ऐंसा स्थान नहीं रह गया है, जहॉ महिला का प्रवेश न हो, अब तो प्रत्येक क्षेत्र में महिलायें पुरूषों के साथ–साथ एक नेतृत्व पूर्ण भागीदारी की भूमिका कंधे से कंधा मिलाकर निर्वाह कर रही हैं । कुछ दशकों पूर्व महिलायें केवल शिक्षिका एवं नर्स के व्यवसाय तक ही सीमित थीं, किन्तु आज की शिक्षित महिला पुरूषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है, चाहे वह मीडिया, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, सुरक्षा एवं राजनीति आदि क्षेत्रों का हो सभी में तेजी से आगे बढ़ रही हैं ।

समाज में महिलाओं की भागीदारी का मूल्यांकन (Evaluation of Participation of Women's in Society) :–

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत एक स्वतंत्र एवं उन्नत विकासशील देशों की श्रेणी में है, लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के 65 वर्षों उपरान्त भी भारतीय समाज में एकरूप समानता का अधिकार महिलाओं को आज भी पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो सका है । आज भी हमारे देश में महिलाओं के प्रति शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य, समानता एवं स्वतंत्रता में भेदभाव है और यह कहने में कोई अतिशियोक्ति भी नहीं है कि महिलायें परिवार एवं समाज में ही सुरक्षित इसलिये नहीं हैं कि आये दिन उन पर तरह–तरह के अत्याचार एवं भेदभाव परिवार एवं समाज के पुरूष वर्ग ही वरन् स्वयं महिला के द्वारा ही महिलाओं पर किये जाते हैं, कि शिक्षित से शिक्षित महिलायें भी अत्याचार का शिकार होने के कारणों से भ्रूण हत्या कराने को मजबूर एवं असहाय हो जाती हैं । भारत में इक्कीसवीं सदी में महिलाओं को केवल कानूनी नजरिये से शिक्षा, समानता, स्वतंत्रता, सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का अधिकार तो प्राप्त है, किन्तु जिसकी हकीकत कुछ और है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परिस्थितियॉ तेजी से बदल रही हैं, जिससे समाज में परिवर्तन हो रहा है और परिवार एवं समाज में व्यक्ति की सोच भी बदल रही है तथा महिलाओं को शिक्षा–दीक्षा एवं नौकरी के लिये भी प्रोत्साहित किये जाने का कार्य परिवार के व्यक्तियों

के द्वारा किये जाने से महिलाओं के आत्म विश्वास एवं जाग्रति की चेतना में बृद्धि हुई है और महिलाओं के नौकरी में भागीदारी पूर्ण रोजगारोन्मुख होने से उनकी मानसिक एवं आर्थिक स्थिति को भी सबलता प्राप्त होने से समाज के विकास में महिलाओं के नेतृत्व के मूल्यांकन के स्तर में भी उचित बृद्धि हुई है ।

सूचना तकनीकी संसाधन एवं महिलायें (Women's and Information Technology Resources):—

आधुनिक वैश्विक परिवेश में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सूचना तकनीकी संसाधनों के क्षेत्र में बेहतर जगह बन रही है और आज विश्व विकास में महिलाओं की भागीदारी पर अधिक बल नहीं दिया जा रहा है, जबकि महिलाओं ने सूचना तकनीकी के क्षेत्र में महत्पूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन इस क्षेत्र में महिलाओं की तुलना में पुरूषों का अनुपात सम्भावित रूप से 80—20 प्रतिशत का है । इस प्रतिशत के साथ महिलाओं को अपना ध्यान इस क्षेत्र में और अधिक स्थापित करने में लगाना होगा और महिलाओं यह साबित करना होगा कि सूचना तकनीकी में लैंगिक समानता जरूरी है । सूचना तकनीकी के क्षेत्र में कई महिलायें हैं, जो समूहों में काम करती हैं, उदाहरणार्थ जिंजो, पायथन एवं एंडेला जैंसी महिलायें है, जो इस क्षेत्र में काफी कार्य कर रही हैं ।

वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीकी और कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका आज भी निरंतर जारी है, जिनमें अमेरिकी महिला मेगन स्मिथ एवं मार्गरेट हैमिल्टन तथा जर्मनी की स्टेफनी स्टीव शर्ली और हमारे देश में सूचना तकनीकी एवं कम्प्यूटर साफ्ट्वेयर उद्योग के क्षेत्र 21 प्रतिशत पेशेवर और वैज्ञानिक के रूप में नन्दिनी हरिनाथ, इसरो एवं परमजीत खुराना, बायोटैक्नालॉजी के क्षेत्र में अपनी भागीदारी की भूमिकाओं का निर्वाह कर रही हैं ।

चुनौतियॉ एवं समस्यायें (Problems and Challenges) :—

आधुनिक समय में नव जागरण युग का शंखनाद हुआ है और दुनिया भर में महिला स्वातंत्र्य का स्वर्णिम समय चल रहा है, जिसका प्रभाव भारत की महिलाओं पर भी पड़ा है और आज महिला आधुनिकता के परिवेश में जी रही है तथा अनेकों समस्याओं के साथ संघर्ष कर रही है, जिसमें उसे सामाजिक समस्याओं के साथ आर्थिक समस्याओं के साथ भी संघर्ष करने के कारणों से नौकरी करनी पड़ रही है । इस प्रकार से महिला अपने परिवार को आर्थिक संकट से उबारने का भी प्रयास तो कर रही है और महिलाओं के नौकरी करने से उनके परिवार का जीवन सुखद तथा सम्पन्न तो होता जा रहा है, किन्तु महिलाओं के लिये अनेकों चुनौतीपूर्ण समस्यायें जन्म ले रही हैं, जैंसे कि व्यवसायिक कार्यों एवं दायित्वों की पूर्ति के साथ—साथ परिवार के सभी लोगों के कार्यों को दोहरी भूमिका के साथ में निर्वाह करना तो प्रमुख चुनौती है ही और महिलाओं के स्वयं के आर्थिक आत्म निर्भरता रहने के बाद भी स्वयं के निर्णय न लेने की कुण्ठा भी एक व्यापक चुनौती के रूप में है । कामकाजी महिलाओं को अपने कार्य स्थल पर तरह तरह की प्रताड़नायें भी एक चुनौतीपूर्ण समस्या के रूप में स्वीकार्य कर उनसे संघर्ष करना पड़ता है ।

निष्कर्ष (Conclusions) :—

प्रस्तुत आलेख का निष्कर्ष है कि विगत् कुछ दशकों में भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा एवं साक्षरता का स्तर काफी द्रुतगति से बढ़ा है तथा महिलाओं के शिक्षित, स्वावलम्बन एवं जागरूक होने से उनके सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक पहलुओं को सबलता भी प्राप्त हुई है । यही नहीं आज की भारतीय महिलायें राजनीतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक, नौकरियों, औद्योगिक कारोबार, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कला, सुरक्षा एवं वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में अपनी भागीदारी पूर्ण नेतृत्वता के साथ नित नये आयामों को अंजाम दे रही हैं, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है आज भी हमारे देश एवं समाज में बहुत सारी महिलाओं को शिक्षा एवं व्यवसायिक सहयोग की आवश्यकता है । जिसकी प्रतिपूर्ति हेतु

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से सरकार एवं शासन तक विचारकों के अभिमतों एवं शोध सुझावों को पहुँचाने आवश्यकता वर्तमान समय की बहुत बड़ी मॉग है ।

संदर्भ (References) :–

1. Desai, Neera and Thakkar, Usha (2004). Women in Indian Society. Delhi : National Book Trust.
2. Dube, S.C. and Gupta, Arvind (2012). Indian Sociology. New Delhi : Vistaar Publishing, pp. 51-52.
3. Madan, G.R. (2010). Western Sociologist on Indian Society. Oxfordshire : Routledge, pp. 219-20.
4. शर्मा, मंजु (2008). भारतीय समाज में महिलाओं का विकास. जयपुर : राज पब्लिशिंग हाउस.
5. Rao, M. Koteswara (2005). Empowerment of Women in India. New Delhi : Discovery Publishing House, pp. 34-36.
6. Sinha, Niroja (2007). Empowerment of Women Through Political Participation. Delhi : Kalpaz Publication, pp. 119-20.